

शाबाश इंडिया



@ShabaasIndia

प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड़, टोंक रोड, जयपुर

गहलोट सरकार की चौथी वर्षगांठ पर BJP मनाएगी 'ब्लैक डे'

जयपुर में बड़ी जनसभा होगी, 200

विधानसभाओं और 33 जिलों में प्रदर्शन होंगे

जयपुर. कास



राजस्थान में कांग्रेस की गहलोट सरकार की चौथी वर्षगांठ पर बीजेपी 'ब्लैक डे' (काला दिवस) मनाएगी। 17 दिसंबर को गहलोट सरकार के 4 साल पूरे होंगे। बीजेपी उससे पहले सरकार के 4 साल के शासनकाल की नाकामियों के खिलाफ ब्लैक पेपर (आरोप पत्र) पेश जारी करेगी। उससे पहले नवम्बर से ही बीजेपी के सरकार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन प्रदेशभर में बड़े लेवल पर शुरू हो जाएंगे। राजस्थान बीजेपी ने सबसे पहले सभी 200 विधानसभा क्षेत्रों में, फिर 33 जिलों में और आखिर में 15 से 17 दिसम्बर के बीच जयपुर में बड़ी "जन आक्रोशी रैली, प्रदर्शन और जनसभा" करने का फैसला लिया है। विधानसभा चुनाव-2023 से ठीक एक साल पहले बीजेपी इस बड़े प्रदर्शन के जरिए प्रदेश कांग्रेस सरकार के खिलाफ चुनावी मुकामले का बिगुल फूकेगी और मैदान में उतरने का शंखनाद कर देगी। जयपुर की जन आक्रोशी रैली और जनसभा में 2 से 3 लाख

लोगों की भीड़ जुटाने का टारगेट है जिसमें प्रदेशभर से बीजेपी नेता तो आएंगे ही, केंद्र से पीएम नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा समेत केंद्रीय मंत्रियों को भी आमंत्रित किया जाएगा। बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया, राजस्थान के 4 केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, अर्जुनराम मेघवाल, कैलाश चौधरी, भूपेंद्र यादव, केंद्रीय चुनाव समिति सदस्य ओम प्रकाश माथुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वसुंधरा राजे, प्रभारी और

सीएम की कुर्सी के 4 में से 2 पाये गायब

BJP के राष्ट्रीय महासचिव और राजस्थान प्रभारी अरुण सिंह ने BJP मुख्यालय पर मीडिया से बातचीत में कहा- विधानसभा चुनाव आ रहा है। सरकार की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है। सरकार का इकबाल खत्म हो चुका है। मंत्री-विधायक सामूहिक इस्तीफा दे चुके हैं। इस्तीफे देने के बाद भी मंत्री काम कर रहे हैं। सरकारी सुविधाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं, यह जनता के साथ धोखा है। कुर्सी बचाने का खेल और नौटंकी हो रही है। विधानसभाध्यक्ष को इस्तीफे स्वीकार करने चाहिए। गहलोट को राष्ट्रीय अध्यक्ष का पर्व भरवाने की घोषणा के बाद कांग्रेस आलाकमान ने पर्व भरने से इनकार कर दिया। गहलोट का क्या नैतिक बल रह गया है? गहलोट जब से उट बने हैं उनकी कुर्सी डगमगा रही है। विधायक-मंत्री धमकाकर ट्रांसफर-पोस्टिंग करवा ले जा रहे हैं। CM की कुर्सी के 4 में से 2 पाये गायब हो गए हैं। 2 ही पाये बचे हैं। उन पर वह कब तक बैठेंगे? उन्हें भी खींचा जा रहा है। ऐसा कभी नहीं होता कि CM बैठक बुलाएं और विधायक धारीवाल के पास चले जाएं। ये नौटंकी ही तो है। सत्ता में रहकर वह ऐसी नौटंकी कर रहे हैं। जनता देख रही है। जनता की परीक्षा में गहलोट सरकार फेल है। चुनाव में 5 साल का कामकाज जनता के बीच ले जाना होता है। अभी 4 साल के कामकाज और इस्तीफों का हिसाब-किताब देना होगा। नवम्बर-दिसंबर में BJP बड़ा आंदोलन करेगी। गांव लेवल तक बहुत प्रभावी और बड़ा आंदोलन होगा।

राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह, सह प्रभारी विजया राहटकर, राष्ट्रीय सचिव अलका गुर्जर, नेता प्रतिपक्ष गुलाबचन्द कटारिया, उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, सांसद किरोड़ीलाल मीणा, सीपी जोशी समेत कई

सांसद-विधायक और दिग्गज जयपुर की रैली में हिस्सा लेंगे। फिलहाल पूरा प्रोग्राम तय किया जा रहा है। जयपुर में मानसरोवर वीटी ग्राउंड या विद्याधर नगर स्टेडियम मैदान पर सभा हो सकती है।

85 फीसदी रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने वापस ली हड़ताल

उदयपुर, झालावाड़, बीकानेर, अजमेर, जोधपुर के डॉक्टर्स ने दी सहमति; जयपुर जार्ड अब भी विरोध में

जयपुर. कास

प्रदेशभर में बॉण्ड नीति को लेकर विरोध कर रहे रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने आज सरकार से वार्ता के बाद हड़ताल वापस लेने पर सहमति जता दी है। उदयपुर, झालावाड़, बीकानेर, अजमेर, जोधपुर मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने आज मेडिकल एज्युकेशन डिपार्टमेंट के सचिव से वार्ता के बाद सहमति पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। हालांकि एसएमएस मेडिकल कॉलेज से संबंधित जयपुर एसोसिएशन ऑफ रेजिडेंट्स डॉक्टर्स (जार्ड) अब भी अपनी मांगों को लेकर आंदोलनरत है। इसको लेकर जार्ड के पदाधिकारी और उनसे जुड़े रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने देर रात जयपुर के त्रिभूति सर्किल पर धरना देकर विरोध प्रदर्शन किया। वहीं जार्ड ने जयपुर में कल से इमरजेंसी सर्विस को भी बंद करने की चेतावनी दी है। धरने से पहले



डॉक्टर्स ने एसएमएस मेडिकल कॉलेज से त्रिभूति सर्किल तक प्रदर्शन रैली निकाली। हाथों में तख्तियां और कैंडल लेकर डॉक्टर्स ने सरकार की नीतियों के खिलाफ नारेबाजी की। इस दौरान जयपुर जार्ड के अध्यक्ष नीरज दामोर ने बताया कि सरकार के साथ रेजिडेंट्स के विभिन्न मुद्दों पर वार्ता के प्रयास किए गए, ताकि लंबे समय से चल रहा गतिरोध तोड़ा जा सके। लेकिन सरकार रेजिडेंट्स को विभाजित करने की राजनीति कर रही है और इस आंदोलन को कमजोर करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि जब तक सरकार बॉण्ड नीति पर अपनी स्थिति

स्पष्ट नहीं करेगी, हमारी हड़ताल जारी रहेगी। इधर सरकार के साथ हुई वार्ता के बाद प्रमुख शासन सचिव वैभव गालरिया ने बताया कि रेजिडेंट डॉक्टर्स की मांगों के संबंध में सहमति बनने पर 85 फीसदी से ज्यादा रेजिडेंट्स ने हड़ताल समाप्ति की घोषणा करते हुए काम पर लोटने का फैसला किया।

इन बातों पर बनी सहमति

गालरिया ने बताया कि सरकार ने बॉण्ड राशि को 25 से घटाकर 10 लाख रुपए किया गया। हालांकि सर्विस का टाइम पीरियड 2 साल पहले की तरह रखा गया। पीजी या सुपर स्पेशियलिटी कोर्सेज करने के बाद बॉण्ड की शर्तों के अनुसार सरकार की संविदा सेवाओं पर नए सिरे से विचार हाईकोर्ट में दायर याचिकाओं के निस्तारण के बाद ही किया जाएगा। हाईकोर्ट के आदेश के बाद 7 से 10 दिन के वर्किंग डे के अंदर प्रवेश बैच 2020-21 और 2021-22 के लिए एस.आर. शिप में चयन प्रणाली निर्धारित की जाएगी। इसमें ये सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी रेजिडेंट डॉक्टर्स को भी एस.आर. शिप के समान अवसर मिल सके।

शुगर (मधुमेह) के लिए प्राचीन और सर्व सुलभ रामबाण औषधि कौन सी है ?

दूब घास का औषधीय गुण हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण संस्कारों का एक अध्याय है। जो हमारे जीवन में बहुत सी औषधीय के रूप में प्रयोग किया जाता है। इतना ही नहीं मधुमेह रोगी के लिये भी बहुत लाभकारी प्रमाणित किया जा चुका है। अगर हम पानी के साथ ताजी दूब धुलकर उबाल कर सेवन करें तो 59 प्रतिशत ब्लड शुगर लेवल कम कर देता है।

जयपुर. शाबाश इंडिया

तुलसीदास ने दूब को अपनी लेखनी में इस प्रकार सम्मान दिया है- “राम दुर्वादल श्याम, पद्माक्षं पीतावाससा।” दूब घास का औषधीय गुण हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण संस्कारों का एक अध्याय है। जो हमारे जीवन में बहुत सी औषधीय के रूप में प्रयोग किया जाता है। इतना ही नहीं मधुमेह रोगी के लिये भी बहुत लाभकारी प्रमाणित किया जा चुका है। अगर हम पानी के साथ ताजी दूब धुलकर उबाल कर सेवन करें तो 59 प्रतिशत ब्लड शुगर लेवल कम कर देता है। दूब या दुर्वा (वैज्ञानिक नाम- ‘साइनोडॉन डेक्टिलॉन’) वर्ष भर पायी जाने वाली घास है जो जमीन पर पसरते हुए या फैलते हुए बढ़ती है। हिन्दू संस्कारों एवं कर्मकाण्डों में इसका उपयोग किया जाता है तथा वर्ष में दो बार सितम्बर-अक्टूबर और फरवरी-मार्च में इसमें फूल आते हैं। तुलसीदास ने दूब को अपनी लेखनी में इस प्रकार सम्मान दिया है- ‘राम दुर्वादल श्याम, पद्माक्षं पीतावाससा।’ प्रायः जो वस्तु स्वास्थ्य के लिये हितकर सिद्ध होती थी, उसे पूर्वजों ने धर्म के साथ जोड़कर उसका महत्त्व और भी बढ़ा दिया है। दूब भी ऐसी ही वस्तु है, यह सारे देश में बहुतायत के साथ हर मौसम में उपलब्ध रहती है। दूब को संस्कृत में ‘दूर्वा’, ‘अमृता’, ‘अनन्ता’, ‘गौरी’, ‘महौषधि’, ‘शतपर्वा’, ‘भार्गवी’ इत्यादि नामों से जानते हैं। दूब घास पर ऊषाकाल में जमीं हुई ओस की बूँदें मोतियों सी चमकती प्रतीत होती हैं। ब्रह्म मुहूर्त में हरी-हरी ओस से परिपूर्ण दूब पर भ्रमण करने का अपना निराला ही आनन्द होता है तथा आँखों के स्वास्थ्य के लिये श्रेयस्कर माना जाता है। पशुओं के लिये ही नहीं अपितु मनुष्यों के लिये पूर्ण पौष्टिक आहार है दूब। महाराणा प्रताप ने वनों में भटकते हुए जिस घास की रोटियाँ खाई थीं, वह भी दूब से ही निर्मित थीं। दूब में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। आयुर्वेद में दूब में उपस्थित अनेक औषधि गुण के कारण दूब को ह्यमहौषधि कहा गया है। आयुर्वेदाचार्यों के अनुसार दूब का स्वाद कसैला मीठा होता है। विभिन्न चैतिक एवं कफज विकारों के शमन में दूब का निरापद प्रयोग किया जाता है। यह दाह शामक, रक्तदोष, मूर्छा, अतिसार, अर्श, रक्त पित्त, प्रदन्, गर्भस्त्राव, गर्भपात, यौन रोग, मूत्रकृच्छ्र इत्यादि में विशेष लाभकारी है। दूर्वा कान्तिवर्धक, रक्त स्तंभक उदय रोग, पीलिया इत्यादि में अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाता है।

प्रयोग

1. दूब के काढ़े से कुल्ले करने से मुँह के छाले मिट जाते हैं।
2. नकसीर में इसका रस नाक में डालने से लाभ होता है।
3. दूब के रस को हरा रक्त कहा जाता है। इसे पीने से एनीमिया ठीक हो जाता है।
4. इस पर नंगे पैर चलने से नेत्र ज्योति बढ़ती है जिससे लोगों को कम क्षमता वाले चश्मा लगने लगे।
5. दूब कुष्ठ (कोढ़) दाँतों का दर्द, पित्त की गर्मी के लिये लाभदायक है। इसका लेप लगाने से खुजली शांत हो जाती है।
6. दूर्वा में रक्त में ग्लूकोज के स्तर को कम करने की क्षमता होती है। इसी कारण मधुमेह रोग नियंत्रित करने में सहायक है।



डॉ पीयूष त्रिवेदी

आयुर्वेदाचार्य

चिकित्साधिकारी राजकीय
आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान
विधानसभा, जयपुर।

9828011871

7. दूर्वा घास शरीर में प्रतिरोधक क्षमता को उन्नत करने में सहायक होती है। इसमें एन्टीवायरल और एन्टी माइक्रोबियल (रोगाणुरोधी बीमारी को रोकने की क्षमता) गुण होने के कारण यह शरीर के किसी भी बीमारी से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है।
8. दूर्वा के प्रयोग से स्त्रियों के स्वास्थ्य सम्बन्धी कई समस्या जैसे सफेद यौन स्राव, बवासीर आदि से राहत मिलती है। इसीलिये दही के साथ दूर्वा घास को मिलाकर सेवन करते हैं।
9. महिलाओं में जो माँ बच्चों को दूध पिला रही है, उनके लिये लाभकारी है क्योंकि प्रोलेक्टिन हार्मोन को उन्नत करने में भी मदद करती है।
10. दूर्वा घास के लगातार सेवन से पेट की बीमारी को खतरा कुछ हद तक कम होने के साथ पाचन शक्ति भी बढ़ती है। यह कब्ज, एसिडिटी से राहत दिलाने में मदद करती है।
11. दूर्वा घास फ्लेवनाइड का मुख्य प्रधान स्रोत होता है। जिसके कारण यह अल्सर रोग को रोकने में मदद करती है।
12. यह सर्दी, खाँसी एवं कफ विकारों को समाप्त करने में सहायक है।
13. दूर्वा मसूड़ों से रक्त बहने और मुँह से दुर्गन्ध निकलने की समस्या (पायरिया) से राहत दिलाती है।
14. दूर्वा घास त्वचा सम्बन्धी बीमारियों में भी सहायक होती है। इसमें एन्टी इन्फ्लेमेटरी (सूजन और जलन को कम करने वाला) एन्टीसेप्टिक गुण होने के कारण त्वचा सम्बन्धी कई समस्याओं जैसे खुजली, त्वचा पर चकत्ते और एक्जिमा आदि समस्याओं से राहत दिलाने में मदद करती है। दूर्वा घास को हल्दी के साथ पीसकर पेस्ट बनाकर त्वचा के ऊपर

यह सर्दी, खाँसी एवं कफ विकारों को समाप्त करने में सहायक है...

लगाने से त्वचा सम्बन्धी कुछ समस्याओं से राहत मिलती है। कुष्ठ रोग और खुजली जैसी समस्याओं से राहत दिलाने में सहायता करती है।

15. दूर्वा रक्त को शुद्ध करती है एवं लाल रक्त कणिकाओं को बढ़ाने में भी मदद करती है जिसके कारण हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ता है।
16. दूर्वा रक्त में कोलेस्ट्रॉल, एच.डी.एल., वी.एल.डी.एल. के स्तर को कम करके हृदय को मजबूती प्रदान करती है।
17. इसके रस में बारीक पिप्सा नाग केशर और छोटी इलायची मिलाकर सूर्योदय के पहले छोटे बच्चों को नस्य दिलाने से वे तंदुरुस्त होते हैं।
18. दूर्वा घास पौष्टिकता से भरपूर होने के कारण शरीर को सक्रिय और ऊर्जायुक्त बनाये रखने में बहुत सहायता करती है। यह अनिद्रा रोग, थकान, तनाव जैसे रोगों में प्रभावकारी है।
19. सुबह नंगे पाँव हरी दूब वाली घास पर चलने से माइग्रेन रोग दूर होता है। ओसयुक्त दूब घास हमारे लिये एक्स्प्रेसर का काम करती है। वैसे आँख की रोशनी बढ़ाने के लिये बहुत सहायक होती है क्योंकि विटामिन ‘ए’ हमें मिलता है। और इस प्रक्रिया से लोगों के चश्मे भी उतरने लगे हैं।
20. दूब के रस में अतीस के चूर्ण को मिलाकर दिन में दो-तीन बार चटाने से मलेरिया में लाभ होता है।

मधुमेह प्रबन्धन में सहायक - दूब घास मधुमेह रोगी के लिये बहुत लाभदायक होती है। हर्बल जानकारों के अनुसार करीब 10 ग्राम ताजी दूब घास एकत्रित करके साफ धोकर उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें और उसे पानी में उबाल लें। फिर छानकर ठंडा करके खाली पेट सेवन करके मधुमेह बहुत हद तक नियंत्रित रहेगी।

प्रयोग द्वारा सिद्ध किया गया है कि सामान्य चूहे में 23 प्रतिशत ब्लड शुगर लेवल कम करने में सहायक होती है और मध्यम मधुमेह रोगी का 31 प्रतिशत और अधिक मधुमेह रोगी का 59 प्रतिशत ब्लड शुगर लेवल कम कर देती है और साथ-साथ ही शरीर का वजन दो सप्ताह में बढ़ने लगता है। जोकि टाइप-1, टाइप-2 मधुमेह रोगी के लिये दूब घास बहुत अधिक लाभकारी है और टोटल कोलेस्ट्रॉल लो डेन्स्ट्री लेवल, टोटल टी.जी. लेवल बहुत हद तक कम कर देती है। हिन्दू समाज में शुभ कार्य जैसे पूजा-पाठ, शादी विवाह, गृह प्रवेश के लिये दूब घास का सदैव प्रयोग किया जाता है, क्योंकि भगवान गणेश को दूब घास से ही नहलाया जाता है। हमने कभी यह नहीं देखा है कि पशुओं में मधुमेह रोग पाया जाता है क्योंकि उनका मुख्यतः आहार दूब घास ही है जिससे वह सदैव स्वस्थ रहते हैं।

धर्म ही बन सकता तारणहार, छोड़नी होंगी संसार की शरण: समकितमुनिजी

उत्तराध्ययन आगम की 27 दिवसीय आराधना का 14 वां दिन

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया



भीलवाड़ा। संसार की शरण छोड़ धर्म की शरण लेनी होगी। धर्म ही आत्मा को तार सकता है। जिस दिन घर पिंजरा या कैदखाना समान महसूस होने लगेगा उसे दिन घर छूट जाएगा। काम, क्रोध जब तक रहेंगे तब तक दुःख दूर नहीं होंगे। मानव को अपनी मंजिल मोक्ष मान उसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। मंजिल प्राप्त करने के लिए योजना बनाकर कार्य करना होता है। ये विचार श्रमणसंघीय सलाहकार सुमतिप्रकाशजी म.सा. के सुशिष्य आगमज्ञाता, प्रज्ञामहर्षि डॉ. समकितमुनिजी म.सा. ने शांतिभवन में बुधवार को परमात्मा भगवान महावीर की अंतिम देशना उत्तराध्ययन आगम की 27 दिवसीय आराधना ह्यह्यआपकी बात आपके साथ 14 वें दिन व्यक्त किए। इसके तहत आगम के 36 अध्यायों में से 15 वें अध्याय सभिक्षु एवं 16वें अध्याय ब्रह्मचर्य समाधि का वाचन करने के साथ इसके बारे में समझाया गया। उन्होंने कहा कि साधक, संयमी व भिक्षु को हमेशा अलर्ट रहना चाहिए ताकि आलस्य भाव नहीं आए। जिदंगी में जब दुःख दर्द आए तो चिल्लाना नहीं बल्कि

सहायता से मना करने वालों को भी कोसने की बजाय उसकी मजबूरी को समझे। मुनिश्री ने कहा कि ब्रह्मचर्य की साधना के लिए स्त्री-पुरुषों को कई नियमों की पालना करनी होती है। सह शिक्षा प्रणाली भी इस साधना में बाधक है। किसी को भी टकटकी लगाकर नहीं देखना चाहिए। अब तो सरकार ने भी धूरने को अपराध की श्रेणी में मान लिया है। ब्रह्मचर्य की साधना करने वालों को गरिष्ठ भोजन से बचना चाहिए और भोजन की साधना करते हुए पेट भर के खाने से बचना चाहिए। उन्होंने कहा कि परमात्मा के सिद्धांत हमारी सुरक्षा के लिए है। हम इन छोटी-छोटी क्रियाओं को माने तो

परमात्मा की वाणी हमारे लिए कल्याणकारी है। शुरू में गायन कुशल जयवंतमुनिजी म.सा. ने प्रेरक गीत प्रस्तुत किया। प्रेरणाकुशल भवान्तमुनिजी म.सा. का भी सानिध्य मिला। लक्की ड्रॉ के माध्यम से भाग्यशाली श्रावक-श्राविकाओं को प्रभावना में चांदी के सिक्के लाभार्थी परिवारों द्वारा प्रदान किए गए। धर्मसभा का संचालन शांतिभवन श्रीसंघ के मंत्री राजेन्द्र सुराना ने किया।

आपके प्रश्न आपके उत्तर प्रतियोगिता का आयोजन

परमात्मा भगवान महावीर की अंतिम देशना

उत्तराध्ययन आगम की 27 दिवसीय आराधना “आपकी बात आपके साथ” के प्रथम 12 अध्यायों के आधार पर प्रवचन के बाद प्रतियोगिता आपके प्रश्न आपके उत्तर का आयोजन किया गया। महिला मंडल की अध्यक्ष स्नेहलता चौधरी व मंत्री सरिता पोखरना ने इसका संचालन किया। इसमें प्रथम अध्यायों के आधार पर मौखिक सवाल किए गए और सर्वाधिक सही जवाब देने के आधार पर विजेताओं का चयन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम संगीता नागौरी, द्वितीय सुमित्रा लोढ़ा एवं तृतीय शकुंतला गोखरू रहे। विजेताओं ने पूज्य समकितमुनिजी से भी आशीर्वाद प्राप्त किया।

महावीर निर्वाण कल्याणक पर तेला तप आराधना 22 से

पूज्य समकितमुनिजी म.सा. ने बताया कि भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में तेला तप आराधना 22 अक्टूबर से शुरू हो रही है। अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाओं को इसमें सहभागिता निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि जो भी श्रावक-श्राविकाएं तेला तप आराधना करना चाहे वह भवान्त मुनिजी म.सा. एवं महिला मंडल की मंत्री सरिता पोखरना से सम्पर्क कर कूपन प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए

26वें भामाशाह पुरस्कार में हिन्दुस्तान जिंक को 7 पुरस्कार

जयपुर. शाबाश इंडिया



हिन्दुस्तान जिंक ने 26वें भामाशाह पुरस्कारों में शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, पहल और परियोजनाओं के लिए सात पुरस्कार प्राप्त किए। भामाशाह पुरस्कार हिन्दुस्तान जिंक के चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर, जिंक स्मेल्टर देवारी, राजपुरा दरिबा कॉम्प्लेक्स, जवार माइन्स, रामपुरा आगुचा माइन, कायड माइन और केंद्रीय सीएसआर टीम प्रधान कार्यालय को शिक्षा क्षेत्र में सकारात्मक योगदान के लिए प्रदान किया गया। ये पुरस्कार टैगौर इंटरनेशनल स्कूल के दीप स्मृति सभागार में शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला, एडिशनल चीफ सेक्रेटरी स्कूल एजुकेशन पवन कुमार गोयल, मोटर गैराज मंत्री राजेन्द्र सिंह यादव, शिक्षा राज्यमंत्री डॉ सुभाष गर्ग, समसा के निदेशक मोहन लाल यादव, निदेशक शिक्षा गौरव अग्रवाल सहित गणमान्य उपस्थित थे। हिन्दुस्तान जिंक की

ओर से राजपुरा दरिबा कॉम्प्लेक्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद जांगिड एवं सीएसआर हेड भुवनेश कुमार, रामपुरा आगुचा के मुख्यकार्यकारी अधिकारी किशोर कुमार एस, सीएसआर हेड अभय गौतम, कायड माइन के हेड केसी मीणा एवं हेड

सीएसआर विवेक कुमार सिंह, चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर के सीएसओ अनुप केआर एवं सीएसआर अधिकारी स्वेतलाना साहु, जिंक स्मेल्टर देवारी से हेड सीएसआर अधिकारी अरूणा चीता एवं राधिका खिरिया, प्रधान कार्यालय से सीएसआर अधिकारी रूचिका

चावला, जावर माइंस से ऑपरेशन हेड राममुरारी एवं महेश माथुर ने यह पुरस्कार प्राप्त किये। हिन्दुस्तान जिंक ने हमेशा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देते हुए उन्हें सफलता हेतु हर संभव सहायता प्रदान की है। ये पुरस्कार शिक्षा क्षेत्र के प्रति हिन्दुस्तान जिंक की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं और ग्रामीण समुदायों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच को सक्षम कर साक्षरता के लिए की गई सीएसआर पहल की विश्वसनीयता को और मजबूत करती है। हिन्दुस्तान जिंक की इकाईयों द्वारा करीब 52.53 करोड़ की राशि व्यय की गयी। चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर ने 13.16 करोड़ की राशि व्यय कर राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया, राजपुरा दरिबा कॉम्प्लेक्स ने 9.34, जावर माइंस ने 2.7 करोड़, जिंक स्मेल्टर देवारी ने 3.64 करोड़, रामपुरा आगुचा ने 4.72 करोड़, प्रधान कार्यालय ने 14 करोड़ एवं कायड माइन द्वारा 5.13 करोड़ व्यय किया गया।

वेद ज्ञान

स्पर्श का ज्ञान...

स्पर्श एक अनुभव है, अनुभूति है और वस्तु के प्रति आत्मबोध है। वैसे तो स्पर्श का अर्थ है किसी वस्तु को छूना, लेकिन इस छूने में जो अनुभव है वह स्पर्श का मूल अर्थ बताता है। स्पर्श मूलतः किसी वस्तु के संपर्क से उत्पन्न होता है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि संगति के संपर्क से मन में काम की उत्पत्ति होती है, लेकिन यहां स्पर्श-बोध का विशेष अर्थ के रूप में प्रयोग किया गया है। भगवान श्रीकृष्ण ने 'संजायते' शब्द का प्रयोग किया है यानी जब हमारी मनोदशा किसी से टकराती है या मन के भावों का कहीं प्रतिरोध होता है, तभी मन में विकार उत्पन्न होता है। जिस प्रकार हवा में किसी वस्तु के प्रक्षेपण से कोई प्रतिक्रिया नहीं होती उसी प्रकार हमारे मन के भावों का जब प्रतिरोध होता है, तभी प्रतिक्रिया होती है, इसलिए काम का बोध हो, क्रोध का बोध हो या अहंकार प्रदर्शन हो, लोभ-ईर्ष्या हो, उसके लिए स्पर्श-बोध और प्रतिरोध आवश्यक है। मनोवैज्ञानिक स्पर्श की गहन व्याख्या करते हुए कहते हैं कि स्पर्श के अनेक प्रकार होते हैं। एक साधारण सा स्पर्श कई दिशाओं में अर्थ की अभिव्यक्ति करता है। जब हम पत्नी का स्पर्श करते हैं, तो एक अलग बोध होता है, पुत्री को स्पर्श करते हैं तो मन में अलग भाव होता है और माता-पिता का चरण स्पर्श करते हैं तो एक अलग दिव्यता का बोध होता है। अब प्रश्न उठता है कि स्पर्श तो एक ही है, लेकिन उसके अनुभव में इतनी विभिन्नताएं क्यों हैं? यही बोध है। बोध की अनुभूति चेतन मस्तिष्क से होती है। लेकिन जब हमारा बोध और हमारी दृष्टि और हमारी चाहत जाग्रत होती है तो उसी के अनुरूप अनुभव भी होता है। इसलिए महत्वपूर्ण है हमारी चाहत। स्पर्श निर्भर करता है कि हमारी स्वीकृति कैसी है। स्पर्श को हम कैसे स्वीकार करना चाहते हैं। स्पर्श के कई प्रकार होते हैं। पहला है दृष्टि स्पर्श। जो अनुभव हमें भौतिक स्पर्श से प्राप्त होता है वही अनुभव हमें दृष्टि अनुभव से भी होता है। दूसरा है स्मृति स्पर्श। जब हम किसी का स्मरण करके किसी का स्पर्श करते हैं, जैसे परमात्मा का स्मरण करके अनुभव प्राप्त करते हैं। स्पर्श अच्छा भी होता है और बुरा भी। यह स्पर्श इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी भावना कैसी है। जब हम किसी वस्तु का स्पर्श करते हैं, उसके पीछे हमारा उद्देश्य क्या है, इसलिए स्पर्श का सारा मनोविज्ञान इस बात पर निर्भर करता है कि स्पर्श करने वाला किस उद्देश्य से स्पर्श कर रहा है।

संपादकीय

शिक्षकों के लिए बहुत कारगर सुझाव

शिक्षा और शिक्षण पर हुए तमाम अध्ययनों में सुचिंतित सुझाव दिए गए हैं, जो सबके लिए और खासकर शिक्षकों के लिए बहुत कारगर हैं। इसके उलट ऐसा लगता है कि कुछ लोग शिक्षण के पेशे में आ तो जाते हैं, लेकिन उन्हें इसके बुनियादी पाठ की भी जानकारी नहीं होती। यही नहीं, शायद वे अपने भीतर पारंपरिक जड़ताओं से उपजी कुंठा लेकर स्कूल में पहुंचते हैं, जहां उनका व्यवहार कई बार इस कदर हिंसक हो जाता है कि किसी बच्चे की जान तक चली जाती है। उत्तर प्रदेश में गौतमबुद्ध नगर के बंबावड़ गांव में निजी स्कूल के एक शिक्षक ने कुछ विद्यार्थियों को बेहद मामूली बात के लिए बुरी तरह से पीटा। इसमें एक बच्चे को ऐसी गहरी चोट आई कि उसकी जान चली गई। बच्चे की गलती यह बताई गई कि कुछ दिन पहले स्कूल में हुई परीक्षा में उसके कम अंक आए थे। क्या यह कोई ऐसी गलती थी, जिस पर एक शिक्षक को इस हद तक क्रूर हो जाना चाहिए था? शिक्षाशास्त्री कहते हैं कि स्कूल में कोई विद्यार्थी अगर पढ़ने में पिछड़ जाता है तो इसके लिए शिक्षक और शिक्षण पद्धति जिम्मेदार हैं। आम सामाजिक बर्ताव में भी गलती या कमी का हल या उसमें सुधार के लिए सकारात्मक प्रयास ही अकेला और मानवीय तरीका माना जाता है। लेकिन शिक्षण जैसे संवेदनशील और जिम्मेदार पेशे को चुनने वाले लोग भी इस साधारण-सी बात को नहीं समझ पाते और स्कूल में छोटे बच्चों को भी मामूली कमी पर यातना देना मुख्य रास्ता मानते हैं। देश के अलग-अलग हिस्से से ऐसी खबरें अक्सर आती रहती हैं कि किसी स्कूल में शिक्षक ने गृहकार्य न करने या पढ़ाई में कोई कमी होने पर किसी बच्चे की बर्बरता से पिटाई की, जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई। ऐसी घटनाओं को गैरइरादतन हत्या की तरह देखा जाना चाहिए। सवाल है कि जिस शिक्षक पर एक बच्चे के जीवन और भविष्य को संवारने की जिम्मेदारी होती है, वही इस शकल में हिंसक क्यों हो जाता है? क्या ऐसे बर्ताव को संबंधित शिक्षक के भीतर छिपी सामंती और हिंसक कुंठा की अभिव्यक्ति नहीं माना जाना चाहिए? सच यह है कि अगर कोई शिक्षक किसी भी वजह से बच्चे के खिलाफ हिंसक होता है, पिटाई या डांट-फटकार करता है तो यह उसके अयोग्य होने का सूचक है। मगर बहुत सारे शिक्षक न तो अपनी जिम्मेदारी समझते हैं और न उन्हें इस मसले पर कानूनी व्यवस्था की परवाह होती है। गौरतलब है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 17 के तहत किसी भी तरह के शारीरिक दंड, मानसिक प्रताड़ना और भेदभाव पूरी तरह प्रतिबंधित हैं। इसके अलावा, किशोर न्याय अधिनियम के तहत भी न केवल ऐसा करने वाले के लिए जेल और जुमाने का प्रावधान है, बल्कि बच्चे की देखभाल और उनकी सुरक्षा के लिए स्कूल की जिम्मेदारी तय की गई है। सवाल है कि शिक्षण की पद्धति, मनोविज्ञान, सामाजिक बर्ताव की कसौटियों से लेकर कानूनी व्यवस्था तक को ताक पर रख कर कोई शिक्षक प्रकारांतर से बच्चे की हत्या करने की हद तक क्यों चला जाता है?



-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

चा

लु वित्त वर्ष की पहली तिमाही में प्रत्यक्ष कर संग्रह, जिसमें कारपोरेट और व्यक्तिगत दोनों कर समाहित हैं, चौबीस फीसद बढ़ कर 8.98 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच गया। इस वित्त वर्ष में प्रत्यक्ष कर संग्रह 14.10 लाख करोड़ रुपए रहने का अनुमान है। निस्संदेह यह सरकार के लिए उत्साहजनक आंकड़ा है। कर संग्रह बढ़ने का अर्थ लगाया जाता है कि कारोबार और लोगों की व्यक्तिगत आमदनी बढ़ रही है। इसके बरक्स जीएसटी में भी उत्साहजनक बढ़ोतरी देखी जा रही है। इससे रोजकोषीय घाटे को पाटने में मदद मिलेगी। सरकार को विकास परियोजनाओं में कटौती नहीं करनी पड़ेगी। इस आधार पर कह सकते हैं कि देश की आर्थिक स्थिति बहुत बुरी नहीं है। इसी से उम्मीद बनती है कि अगर अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर मुस्तैदी से काम हो, तो विकास दर को बेहतर बनाने में जल्दी कामयाबी मिल सकती है। मगर हकीकत यह है कि कर संग्रह से अर्थव्यवस्था की बेहतर का ठीक-ठीक पता नहीं मिलता। कर संग्रह बढ़ने की कुछ वजहें तो साफ हैं। पिछले कुछ समय से जीएसटी में लगातार बढ़ोतरी की गई है, जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष करों पर भी पड़ा है। जब किसी वस्तु पर जीएसटी बढ़ता है, तो उसी अनुपात में उत्पादन से लेकर वस्तु के उपभोक्ता तक पहुंचने के क्रम में कर बढ़ते जाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि अर्थव्यवस्था भी उसी अनुपात में बेहतर हो रही है। प्रत्यक्ष कर संग्रह कई बार उपभोक्ता पर बढ़े करों का संकेत भी देते हैं। असलियत यह है कि पिछले महीने निर्यात में साढ़े तीन फीसद की गिरावट दर्ज की गई। औद्योगिक उत्पादन दर 2.4 फीसद पर सिमटी हुई है। व्यापार घाटा लगभग दोगुना हो गया है। ऐसे में कर संग्रह में बढ़ोतरी से सरकार को अपने खर्च में कटौती से भले थोड़ी राहत मिल जाए, पर देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में मदद नहीं मिल सकती। सकल घरेलू उत्पाद की दर पिछले कई सालों से भारी उद्योगों और सेवा क्षेत्र के प्रदर्शन पर निर्भर होती गई है। स्वाभाविक ही इन क्षेत्रों के खराब प्रदर्शन से इसका रुख नीचे की तरफ बना हुआ है। फिर निर्यात के मामले में सुस्ती भारी उद्योगों में उत्साह पैदा नहीं कर पा रही। कुछ दिनों पहले ही अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन ने चिंता जताई कि अगले चार सालों तक पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था में सुस्ती बनी रहेगी। विश्व व्यापार के मोर्चे पर इस साल भी गिरावट जारी रहेगी। ऐसे में भारत के लिए बाहर के बाजारों में अपनी जगह तलाशना कठिन बना रहेगा। महंगाई पर काबू पाना बड़ी चुनौती है, मगर अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों का रुख अनिश्चित बना हुआ है। छोटे, मंजोले और सूक्ष्म उद्योगों की कमर कोरोनाकाल में ही टूट गई थी। वे अभी तक उबर नहीं पाए हैं। इसी क्षेत्र में रोजगार की गुंजाइश अधिक होती है, बड़े उद्योग तो मशीनों पर निर्भर रहते हैं। इसलिए रोजगार के मोर्चे पर कामयाबी नहीं मिल पा रही, इसलिए लोगों की क्रयशक्ति में इजाफा नहीं हो पा रहा। बाजारों में रौनक लौट नहीं पा रही। इस सबके बावजूद अगर प्रत्यक्ष कर संग्रह में बढ़ोतरी हो रही है, तो इसी उत्साह के साथ सरकार को दूसरे मोर्चों पर भी काम करने की जरूरत है।

उत्साह का संग्रह

अमोघमति माताजी का संयम दीक्षा दिवस समारोह

मनोज नायक, शाबाश इंडिया

मुरार। परम पूज्य आर्यिका श्री 105 अमोघमति माताजी का प्रथम संयम दीक्षा महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री 105 आर्षमति माताजी इस समय मुरार में चातुर्मासरत हैं, उनकी संघस्थ आर्यिका अमोघमति माताजी को दीक्षा लिये हुये एक वर्ष पूरा होने पर इस पुनीत एवं पावन दिन को संयम दीक्षा दिवस समारोह के रूप में मनाया गया। संयम दिवस समारोह में मंगलाचरण जैन बालिका मंडल मुरार ने किया। चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन जैन मिलन सिद्धार्थ महिलाओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा माताजी को शास्त्र एवं वस्त्र भेंट किये गए। कार्यक्रम के सन्दर्भ में संघस्थ कंचन दीदी ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रातः अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, भक्ताम्बर विधान, धर्मसभा, दोपहर में भजन संध्या एवं रात्रि में भक्ताम्बर दीप अर्चना का आयोजन किया गया। आपने परम पूज्य सराकोद्वारक समाधिस्थ षष्टपट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की छत्रछाया में रहकर संयम की साधना की। आज से एकवर्ष पूर्व 12 अक्टूबर 2021 को मुरेना नगर में परम पूज्य सप्तम पट्टाचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर, गुरु आज्ञा का पालन करते हुए परम पूज्य गणिनी आर्यिका आर्षमति माताजी के संघ में रहकर साधना करने का निश्चय किया।



कैसे मिले मन की शांति: आर्यिका श्री विज्ञाश्री माताजी

निवाई, शाबाश इंडिया

परम पूज्य भारत गौरव गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्य सहजता, सरलता वात्सल्य को देखकर आज का नहीं बल्कि आगामी समाज आगामी राष्ट्रीय भी सिर झुकानेगा। गुरु मां विज्ञाश्री माताजी ने प्रत्येक व्यक्ति को बताया मन की शांति का उपाय। गुरु मा ने कहा कि जीवन में ऊंचाइयों को प्राप्त करने का प्रयास करो। सन्यासी हो या संसारी जो भी अपने-अपने क्षेत्र में ऊंचाइयां प्राप्त करें, काम करने का सलीका और तरीका बेहद संजीदा होना चाहिए। जीवन में उत्पान को पाना है तो अपने जीवन में क्वालिटी होनी



चाहिए। गुरु मां ने कहा कि किसी सज्जन ने मुझे पूछा माताजी श्रावक या साधु कौन सा जीवन जीना चाहिए। मां ने उनसे बस यही कहा की जो भी जीवन जीओ बड़े बहतरीन तरीका से। चाहे साधु का

या श्रावक का केवल वेष बदलने से हाथ में पिच्छी कमण्डल लेने मात्र से कोई सन्यासी नहीं हो जाता है जब तक की वह अपने जीवन को नहीं बदलता और दूसरों के जीवन में प्रकाश नहीं लाता।

बीकानेर थिएटर फेस्टिवल शुक्रवार से

पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक कार्यक्रम गुरुवार को

बीकानेर. कासं। सातवां बीकानेर थिएटर फेस्टिवल शुक्रवार से शुरू होगा। इससे पहले गुरुवार को सायं 6 बजे टीएम ऑडिटोरियम गंगाशहर में सांस्कृतिक संध्या आयोजित की जाएगी। सांस्कृतिक संध्या में वीणा जोशी द्वारा कथक नृत्य, पुखराज स्वामी द्वारा मांड गायन, राजेंद्र जोशी द्वारा सितार वादन, स्वाति भटनागर द्वारा कालबेलिया और भवई नृत्य, के.के.रंगा द्वारा मिमिक्री और अहमदाबाद की टीम द्वारा ढोल की प्रस्तुति होगी। उद्घाटन समारोह शुक्रवार सायं 5 बजे हंशा गेस्ट हाउस में आयोजित होगा। पांच दिन के समारोह के दौरान 25 नाटकों का मंचन होगा।



16 से शुरू होंगे ग्रामीण ओलंपिक के फाइनल मुकाबले

जयपुर, शाबाश इंडिया

जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में 16 से 19 अक्टूबर तक ग्रामीण ओलंपिक के फाइनल मुकाबले खेले जाएंगे। इसमें प्रदेश के 33 जिलों की 330 टीमों के 3696 खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। इनमें एक हजार 782 पुरुष और एक हजार 914 बालिका खिलाड़ी आपस में मुकाबला करते नजर आएंगे। वहीं फाइनल मुकाबले के विजेताओं को एटलेंचर स्पोर्ट्स द्वारा सात लाख बीस हजार रुपए के नगद पुरस्कार दिए जाएंगे। क्रीड़ा परिषद की अध्यक्ष कृष्णा पूनिया ने बताया कि ग्रामीण ओलंपिक के तीन चरण अब तक पूरे हो चुके हैं



जिसमें ब्लॉक तहसील और जिला स्तर पर हर उम्र के 30 लाख से ज्यादा राजस्थानी खिलाड़ी खेल चुके हैं। वहीं अब 16 से 19 अक्टूबर तक होने वाले फाइनल में लगभग 4000

खिलाड़ी खेलेंगे। 16 अक्टूबर को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की मौजूदगी में शानदार फाइनल मुकाबले की शुरूआत होगी। इसमें प्रदेशभर के 12 हजार से अधिक खिलाड़ी जो ग्रामीण ओलंपिक का हिस्सा रह चुके हैं वे भी शामिल होंगे। इस दौरान कृष्णा पूनिया ने कहा कि कोई भी कॉर्पोरेट खेलों के लिए पैसे नहीं देता है जिसके कारण खेलों में हम पीछे हैं। आज एटलेंचर स्पोर्ट्स ने छोटी ही सही पर एक नई शुरूआत हुई है जिसके चलते और भी लोग प्रोत्साहित होकर मदद करने के लिए आगे आ सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज खेलों के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी है। लेकिन अगर ईमानदारी से प्रयास किए जाएं।



आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज ने कहा...

मजबूत लोग अपने फैसलों से दुनिया बदल देते हैं

जयपुर, शाबाश इंडिया

गुलाबी नगरी जयपुर में आचार्य गुरुवर सुनील सागर महा मुनिराज अपने संघ सहित भट्टारक जी की नसिया में चातुर्मास हेतु विराजमान है। प्रातः भगवान जिनेंद्र का जलाभिषेक एवं पंचामृत अभिषेक हुआ, उपस्थित सभी महानुभावों ने पूजा कर अर्घ्य अर्पण किया। पश्चात गुरुदेव के श्री मुख से शान्ति मंत्रों का उच्चारण हुआ, सभी जीवों के लिए शान्ति हेतु मंगल कामना की गई। आज प्रातः बेला में आर्यिका 105 श्री संगीतमति माताजी का केश लोच हुआ। सन्मति सुनील सभागार मे रमेश गंगवाल इंदिरा बड़जात्या रुपेंद्र छबड़ा, विकास बड़जात्या राजेन्द्र पापडीवाल व सुरेन्द्र शाह तथा बाहर से आए सभी श्रावकों ने अर्घ्य अर्पण कर चित्र अनावरण करते हुए दीप प्रज्वलन कर धर्म सभा का शुभारंभ किया। उक्त जानकारी देते हुए चातुर्मास व्यवस्था समिति के प्रचार मंत्री रमेश गंगवाल ने बताया, मंगलाचरण व मंच संचालन इन्दिरा बड़जात्या जयपुर ने किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के महा मन्त्री ओम प्रकाश काला ने बताया कि बाहर से पधारे अतिथि महानुभावों ने आचार्य श्री के समक्ष श्रीफल अर्पण किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के मुख्य संयोजक रुपेंद्र छबड़ा राजेश गंगवाल ने बताया धर्म सभा मे श्री बी एल सोनी पूर्व डीजीपी राजस्थान पुलिस एवं दिनेश खोडनिया ने आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन किया। गुरुवर को जिनवाणी शास्त्र भेंट किया गया। दिनेश खोडनिया जी ने अपने वक्तव्य में गुरुदेव का वंदन करते हुए, बी एल



सोनी का परिचय देते हुए उनके उल्लेखनीय योगदान के बारे में बताया। बी एल सोनी डीजीपी ने कहा हमारे देश के युवाओं में बहुत ऊर्जा है उन्हें धर्म से लगाव होना चाहिए, धर्म से हमें युवाओं को जोड़ना चाहिए। पूज्य आचार्य भगवंत ने अपनी वाणी से पर कल्याण की भावना से उद्बोधन देते हुए कहा कि वंदामी 24 जिनेशम, मजबूत लोग अपने फैसलों से दुनिया बदल देते हैं। कमजोर लोग दुनिया के डर से अपने फैसले ही बदल देते हैं। मुनियों की साधना को देखो उन्होंने पांच महाव्रतों का पालन करने का संकल्प किया है, यह पूर्ण

परिग्रह के त्यागी हैं। 24 घंटे में एक बार का नियम है आहार ग्रहण करने का। और इस नियम का वह पूर्णता से पालन करते हैं। सोनी साहब तो काजल की कोठरी में है फिर भी दाग कहीं से भी लगने नहीं देते हैं। जैन धर्म तो जन धर्म है जन जीवन का धर्म है। यह धर्म इंसान को इंसान से जोड़ने की बात करता है देश को देश से जोड़ने की बात करता है। जन्म से जैन होने से कुछ नहीं होता है आचरण से कर्म से जैन होना चाहिए। विरले ही इंसान होते हैं जिनके जीवन से ही झलकता है धर्मा चरण क्या है। अगर पुलिस अधिकारी लोग समाज

कंटको से समाज को विहीन करते हैं, तभी तो संत सुरक्षित हैं। यह लोग इतने ऊंचे पद पर पहुंच कर भी अच्छाई को नहीं छोड़ते हैं यह अति प्रशंसनीय है। हम दुनिया में आए हैं तो ऐसा कुछ करें कि वापस जाएं तो जवाब देने के लायक बने रहें। वर्धमान स्वामी के पांच महाव्रतों का पालन करें और सारी दुनिया में इन्हें लागू कर दिया जाए तो पुलिस की भागमभाग बिल्कुल कम हो जाएगी। हमारी आत्मा शाश्वत है कभी मिटने वाली नहीं है। पुराना कपड़ा छोड़कर इंसान नया कपड़ा धारण करता है।

कैंसर होने पर शरीर देता है ये 5 संकेत, नज़रअंदाज ना करें, जल्द डॉक्टर को दिखाएं

जितनी जल्दी कैंसर की उपस्थिति का पता चलता है, उतना ही बेहतर रोग का निदान होता है। अपने डॉक्टर से बात करें।

कैंसर के नाम से सभी डरते हैं। रोगी और उसके परिवार अक्सर चिंता करते हैं लेकिन हमेशा डरने की जरूरत नहीं है। सही जानकारी और उचित समय पर उठाए गए कदमों से आप कैंसर को मात दे सकते हैं। कैंसर की बेहतर जांच के कारण लोग अब कैंसर के निदान के बाद पहले से कहीं अधिक समय तक जीवित रह रहे हैं। आपको कुछ संकेतों पर ध्यान देना चाहिए और सतर्क रहना चाहिए। नियमित जांच में बीमारियों का जल्दी पता चल जाता है, जब उनका इलाज आसान होता है। कैंसर आज के जमाने की एकमात्र बीमारी नहीं है। कुछ गलत जीवनशैली से कैंसर पैदा करने वाले कार्सिनोजेन्स विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है। कुछ विशिष्ट लक्षण हैं जिन पर ध्यान देना चाहिए। जितनी जल्दी कैंसर की उपस्थिति का पता चलता है, उतना ही बेहतर रोग का निदान होता है। ध्यान देने योग्य अन्य लक्षणों में खांसी या गला बैठना, असामान्य रक्तस्राव आदि शामिल हैं। कैंसर के इन लक्षणों के बारे में अपने डॉक्टर से बात करें।



थकान उस तरह नहीं है जैसा आप दिन भर के काम या खेल के बाद महसूस करते हैं। अत्यधिक थकान जो आराम करने से ठीक नहीं होती है, वह कैंसर का प्रारंभिक संकेत हो सकता है। कैंसर रिसर्च यूके नामक एक चैरिटी के अनुसार, सुबह उठना मुश्किल होना अक्सर थकान का एक स्पष्ट संकेत होता है। लेकिन सिर्फ इसलिए कि आप थके हुए हैं इसका मतलब यह नहीं है कि आपको कैंसर है। थकान के बहुत सारे कारण होते हैं, उनमें से कई कैंसर से संबंधित नहीं होते हैं। यदि आपके लक्षण काफी गंभीर हैं, तो अपने डॉक्टर को बुलाएं।

3. बार-बार बुखार

बुखार सर्दी और फ्लू का एक सामान्य लक्षण हो सकता है, और यह अपने आप ठीक हो जाता है। लेकिन अगर बुखार का कैंसर से संबंध है, तो कुछ निश्चित संकेत हैं जिन पर



डॉ पीयूष त्रिवेदी

आयुर्वेदाचार्य

चिकित्साधिकारी राजकीय
आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान

विधानसभा, जयपुर।

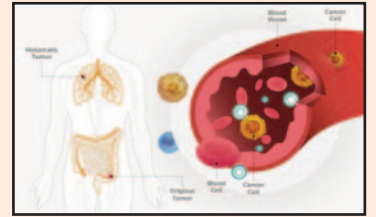
9828011871

किसी स्पष्ट कारण के बार-बार आता है या क्या आपको ज्यादातर रात में बुखार आता है।

हैं। तो बुखार का कारण क्या है। क्या आपको रात में पसीना आता है। यदि हां, तो जांच कराइये।

4. शरीर में लगातार दर्द

वेबएमडी के अनुसार, कुछ प्रकार के कैंसर दर्द के साथ प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिए, हड्डी



का कैंसर अक्सर शुरू से ही दर्द करता है। कुछ ब्रेन ट्यूमर के कारण सिरदर्द होता है जो कई दिनों तक रहता है और इलाज से ठीक नहीं होता है। दर्द कैंसर का देर से आने का संकेत भी हो सकता है, इसलिए अगर आपको नहीं पता कि ऐसा क्यों हो रहा है या यह ठीक नहीं होता है तो डॉक्टर से मिलें।

5. त्वचा में परिवर्तन होना

हमारी त्वचा हमारे शरीर का सबसे बड़ा अंग है। क्या आपके डॉक्टर ने आपके शरीर पर असामान्य या नए तिल, धक्कों, गांठों या निशानों को जांचा है। पीलिया (आंखों या उंगलियों का पीला पड़ना) एक ऐसा लक्षण है जो संभावित संक्रमण या कैंसर का संकेत दे सकता है। तिल में बदलाव भी चिंता का कारण हो सकता है। धब्बे जो खून बहते हैं और दूर नहीं जाते हैं, वे भी त्वचा कैंसर के लक्षण हैं। मुंह का कैंसर आपके मुंह में छाले के रूप में शुरू हो सकता है।

1. वजन घटना

कैंसर वाले लोगों में वजन कम होना आम है। यह रोग का पहला दिखाई देने वाला लक्षण हो सकता है। कैंसर.नेट (यूएसए) का कहना है कि 40 प्रतिशत लोगों का कहना है कि जब उन्हें पहली बार कैंसर का पता चला था तो उनका वजन कम हो गया था। डॉक्टर 'कैशेक्सिया' नामक वजन घटाने के सिंड्रोम का उल्लेख करते हैं, जो कि बढ़े हुए चयापचय, अस्थि मांसपेशियों की हानि, थकान, भूख की कमी और जीवन की गुणवत्ता में कमी की विशेषता है।

2. अत्यधिक थकान

जॉन्स हॉपकिन्स मेडिसिन की रिपोर्ट में कहा

कैंसर.नेट (यूएसए) का कहना है कि 40 प्रतिशत लोगों का कहना है कि जब उन्हें पहली बार कैंसर का पता चला था तो उनका वजन कम हो गया था। डॉक्टर 'कैशेक्सिया' नामक वजन घटाने के सिंड्रोम का उल्लेख करते हैं, जो कि बढ़े हुए चयापचय, अस्थि मांसपेशियों की हानि, थकान, भूख की कमी और जीवन की गुणवत्ता में कमी की विशेषता है।

गया है कि छिपे हुए कैंसर के कारण होने वाली

आपको ध्यान देना चाहिए। क्या बुखार बिना

आपके पास संक्रमण के कोई अन्य लक्षण नहीं



सागर मे हुआ संभागीय पत्रकार सम्मेलन

राष्ट्र निर्माण में संत और पत्रकारों की अहम भूमिका : मुनिश्री विरंजन सागर जी

रजेश जैन बकस्वाहा, शाबाश इंडिया



सागर। पूज्य जैन संत मुनि श्री विरंजन सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में सम्भागीय पत्रकार सम्मेलन का आयोजन अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद की मप्र.शाखा तथा श्री गौराबाई दिग.जैन मंदिर समिति सागर के तत्वावधान में वर्षा वाचनालय सागर में आयोजित किया गया। सम्मेलन के प्रारम्भ में आचार्य श्री विद्या सागर महाराज तथा आचार्य श्री विराग सागर महाराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन अतिथि सुनील जैन पूर्व विधायक, श्रीमति निधि जैन आचरण सम्पादक, कैलाश चंद्र दाऊ वरिष्ठ समाजसेवी, मुकेश जैन ढाना वरिष्ठ पत्रकार, राजेश रागी वरिष्ठ पत्रकार बकस्वाहा एवं गौराबाई मंदिर समिति के पदाधिकारी राकेश चच्चा जी, सुदेश तिवारी, हरी चौबे द्वारा किया गया तथा मंगलाचरण की प्रस्तुति अनोखी पडेले दी। पत्रकार संगोष्ठी का मुख्य विषय भारतीय संस्कृति के उत्थान में पत्रकारों की भूमिका विषय पर प्रमुख रूप से सुनील जैन पूर्व विधायक, मुकेश जैन ढाना, राजेश रागी बकस्वाहा, आशीष जैन, राजेंद्र जैन अटल दमोह, कवीश सिंधई पथरिया, अजय सराफ, कार्यक्रम के संयोजक मनीष विद्यार्थी शाहगढ़ व अखिल जैन सागर सहित सम्भाग

के कई पत्रकारों ने अपने विचार रखें। पत्रकार सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुनि श्री विरंजन सागर महाराज ने कहा कि राष्ट्र एक व्यापार नहीं एक परिवार है, जहां संतों और पत्रकारों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। पत्रकारों के पास कलम हैं और संतों के पास कर्मण्डल है, कलम और कर्मण्डल के संयुक्त आभामंडल से राष्ट्र की जय जयकार हो सकती हैं। मुनिश्री ने कहा कि हम आगम की वाणी को अपने माध्यम से पूरी दुनिया में बोलकर प्रचारित करते हैं और आप कलम के जरिए उस बात को जन जन तक पहुंचाते हैं, इस तरह पत्रकार और संतों का संयुक्त योगदान हो जाय तो राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। संत और पत्रकार राष्ट्र के निर्माण में विशेष भूमिका

निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में पत्रकारों की आवश्यकता अनादि काल से ही रही है, देव ऋषि नारद को उन्होंने दुनिया का पहला पत्रकार कहा, उन्होंने कहा भारत देश में राम, महावीर और कृष्ण जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया है, इस देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था, आज भारत की संस्कृति पर पश्चिमी सभ्यता हावी हो गई है। उन्होंने कहा जो लोग अपने माता पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं उन लोगों का नाम और उनकी तस्वीर अखबारों में आनी चाहिए ताकि सारी समाज को पता चले इस समाज में कैसे-कैसे लोग रहते हैं। उन्होंने कहा अगर किसी जैन संत का फोटो फेसबुक पर डाल दिया जाए तो फेसबुक संबंधित व्यक्ति की प्रोफाइल लॉक

पत्रकार हुए सम्मानित

इस सम्मेलन में सागर संभाग से आमंत्रित पत्रकारों को प्रशस्ति पत्र स्मृति चिन्ह, श्रीफल, वस्त्र, माला, साहित्य व किट से सम्मानित किया गया, वहीं मुनिश्री ससंघ का मंगल आशीष प्राप्त हुआ। इस सम्मेलन में सम्भाग के 70 जैन जैनेतर पत्रकारों ने भाग लिया।

कर देते हैं और उस पर लिखा आता है कि यह हमारी संस्कृति के अंतर्गत नहीं हैं, तो मैं ऐसे लोगों से कहना चाहता हूँ कि दिगंबर मुद्रा तो भारत की संस्कृति है, इस देश में हमेशा जैन संत हुए व होते आ रहे हैं, जैन संत का बिछौना जमीन और चादर आसमान ही होता है, इसके विपरीत जब फिल्मों की अश्लील तस्वीरें फेसबुक पर वायरल की जाती हैं तब ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाता है, यह विषय सोचनीय है। मुनि श्री के पूर्व छल्लक विसौम्य सागर जी महाराज ने कहा कि पहले खबर आती थी अब न्यूज आती है, समाचार का अर्थ है होता है सम और आचार अर्थात जो सम्यक विचारों को बतलाए वही समाचार है। उन्होंने कहा हमेशा अच्छा देखो, अच्छा बोलो, अच्छा सुनो, यदि आप सबके साथ अच्छा करते हैं तो आपके साथ भी अच्छा होगा।



आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादक: राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

आठ शहरों में रात का पारा 20° से नीचे, जयपुर 22 डिग्री



जयपुर. शाबाश इंडिया। पोस्ट मानसून का दौर थमते ही प्रदेश में सर्दी दस्तक दे रही है। बारिश रुकते ही बीते 24 घंटे में प्रदेश के ज्यादातर शहरों में रात के तापमान में गिरावट आई है। आठ शहरों में यह 20 डिग्री सेल्सियस से नीचे आ गया और सीकर में तो 15.5° दर्ज हुआ। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार इस बार सर्दी जल्दी पड़ने लगी है। इसका मुख्य कारण यह है कि मानसून देर तक रुका और हाल ही ज्यादातर इलाकों में जोरदार बारिश से वातावरण में नमी बनी हुई है। अब मौसम साफ होने के साथ तापमान गिरने लगा है। सुबह-शाम ओस जमने लगी है और कोहरा जोर दिखाने लगा है। अगले एक सप्ताह तक मौसम पूरी तरह साफ रहने के साथ रात का तापमान और गिरने का अनुमान है।